संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री उत्तम ओंकार येवले का ``मोहन राकेश के नाटकों में चित्रित प्रेम भावना का अनुशीलन`` लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर

दिनांक : 19/11/98

अध्यक्ष, 19/11/98
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004

शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग कोल्हापुर

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए .,बी.एड्.,पीएच् .डी.
अधिव्याख्याता (वरिष्ठ श्रेणी), हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004

दिनांक : 19 नवंबर, 1998

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.उत्तम ओंकार येवले ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए ``मोहन राकेश के नाटकों में चित्रित प्रेम भावना का अनुशीलन`` लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध-निर्देशक,

(डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण)

कोल्हापुर
दिनांक : 19/11/1998

प्रख्यापन

``मोहन राकेश के नाटकों में चित्रित प्रेम भावना का अनुशीलन`` लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

(श्री.उत्तम ओंकार येवले)

कोल्हापुर

दिनांक : 19/11/98

प्राक्कथन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का विषय है - ``मोहन राकेश के नाटकों में चित्रित प्रेम भावना का अनुशीलन।`` जब मैंने सुविख्यात नाटककार मोहन राकेश के `आषाढ़ का एक दिन` और `आधे अधूरे` नाटक पढ़े तब मुझे महसूस हुआ कि इस नाटककार ने मनुष्य जीवन के कड़वे सच को समाज के सामने लाया है। `आषाढ का एक दिन` और `आधे अधूरे` की कथावस्तु, संवाद , रंगनिर्देशन और प्रस्तुतीकरण की कला ने मुझे अपनी ओर खींचा तत्पश्चात् मैंने उनके चारों नाटकों का अध्ययन किया । उनके सभी नाटकों से मैं प्रभावित हुआ। मैंने पाया कि राकेश के नाटकों में प्रेम भावना सर्वत्र विद्यमान है। यही उनके नाटकों का केंद्र बिंदु है। अत: राकेश के नाटकों ने मुझे केवल प्रभावित ही नहीं किया बल्कि गंभीरता से सोचने को भी प्रेरित किया। फलत: मैंने मोहन राकेश के नाटकों को अपने लघु शोध-प्रबंध के विषय के रूप में चुन लिए। इस विषय को लेकर जब मैं आदरणीय गुरूवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण जी, वरिष्ठ अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर से मिला और विषय चयन की चर्चा की तो उन्होंने इस विषय को तुरंत अपनी सहमति दर्शाई। मार्गदर्शक के रूप में आपका उपलब्ध होना मेरे लिए बेहद प्रसन्नता की बात सिद्ध हुई। इसलिए मेरे शोध कार्य के संकल्प का इन पृष्ठों पर साकार होना सरलता से संभव हुआ।

इस विषय का अध्ययन प्रारंभ करते समय मेरे मन में निम्नलिखित प्रश्न खड़े हुए थे -

1. मोहन राकेश का जीवन कैसे बीता?
2. राकेश के नाटकों की मूल भावना क्या है?
3. राकेश के नाटकों में प्रेम के कौन-कौन से रूपों का चित्रण किया गया है?
4. राकेश के नाटकों में किस प्रकार का प्रेम सशक्तता के साथ चित्रित है?
5. राकेश ने प्रेम में बाधा उत्पन्न करनेवाली कौन-कौन सी समस्याओं को चित्रित किया है?

अध्ययन के उपरांत मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में लिख दिया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर अपने विषय का विवेचन किया है -

प्रथम अध्याय का शीर्षक है - ``मोहन राकेश : व्यक्तित्व एवं कृतित्व`` इसके अंतर्गत मोहन राकेश के जीवन एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। इस अध्याय में उनके जन्म, माता-पिता, परिवार, पारिवारिक स्थिति, बचपन, शिक्षा-दीक्षा, नौकरी, वैवाहिक जीवन, मृत्यु आदि बातों का विवेचन किया है तथा उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट किया है। राकेश के साहित्यिक कृतियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है - ``मोहन राकेश के नाटक : विषयगत अध्ययन`` इस अध्याय के अंतर्गत मोहन राकेश के सभी नाटकों का विषयगत विवेचन प्रकाशन क्रम के अनुसार प्रस्तुत किया है। नाटकों का विषयगत विवेचन करते समय उनके हर नाटक का संक्षिप्त परिचय देकर अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है - ``प्रेम संकल्पना स्वरूप और सिद्धांत`` इसके अंतर्गत प्रेम शब्द की व्युत्पित्ति, व्युत्पित्ति-परक अर्थ, कोशगत अर्थ दिए हैं। अनेक विद्वानों ने प्रेम के अर्थ एवं परिभाषा अपने-अपने ढंग से की है। उन्हें मैंने यहाँ उद्धृत कर अपना स्वयं का मत स्पष्ट किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिया है।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है - ``विवेच्य नाटकों में चित्रित प्रेम भावना`` इसमें मैंने राकेश ने जो विविध प्रेम के रूपों का चित्रण किया है उनका विवेचन किया है। इन विविध रूपों में राकेश ने कौन से प्रेम के रूप का अधिक मात्रा में चित्रण किया है इसका विवेचन किया है। अंत में वैज्ञानिक पद्धति से प्राप्त

तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिया है।

पंचम अध्याय का शीर्षक है - ``विवेच्य नाटकों में प्रेम समस्याएँ`` इसके अंतर्गत राकेश के नाटकों में प्रेम में बाधा उत्पन्न करनेवाली सभी समस्याओं का चित्रण किया गया है। इस अध्याय में चित्रित समस्याएँ राकेश के सभी नाटकों में मौजूद हैं या नहीं। इसका भी विवेचन किया गया है। ऐसी कौन सी समस्याएँ हैं जो राकेश के सभी नाटकों में प्रस्तुत हैं? वे समस्याएँ काल्पनिक या वास्तविक? आदि का भा इसमें विवेचन किया है। क्या कोई ऐंसा नाटक है जिसमें प्रेम विषयक सभी समस्याएँ मौजूद है? इसका भी विवेचन इस अध्याय में किया है। अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

अंत में उपसंहार के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं। तत्पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध आदरणीय गुरूवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण,अधिव्याख्याता,(वरिष्ठश्रेणी) हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी साहित्य साधक, उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के, आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का यह फल है। अपने कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी समय-समय पर आपने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना असंभव है। बस यही कहूँगा कि आपके प्रति हरदम कृतज्ञ ही रहूँगा और भविष्य में भी आपके आशीर्वाद और मार्गदर्शन की कामना करूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.वसंत मोरे जी तथा विभागाध्यक्ष डॉ.पी.एस.पाटील जी से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में यथायोग्य और अनमोल मार्गदर्शन के साथ-साथ स्नेह और

प्यार प्राप्त हुआ है। अत: मैं आजन्म उनका ऋणी हूँ। आदरणीय गुरूवर्य लक्ष्मणराव खडके, प्राचार्य आर.डी.गायकवाड, श्री.विठ्ठल लिपारे, श्रीमती छायादेवी घोरपडे, श्रीमती एम.एस.जाधव, डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है। उनके प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

मेरी शिक्षा-दीक्षा तथा प्रस्तुत शोध कार्य की पूर्ति के लिए अनंत कष्ट उठानेवाली मेरे आदर्शवादी माता-पिता के रूप में परम पूज्य `माई` सौ.सिंधूताई श्रीहरी सपकाळ का आशीर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देता रहा है। अत: मैं आजन्म उनके ऋण में रहूँगा।

प्रिन्स शिवाजी मराठा बोर्डिंग हाऊस शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री.शंकरराव एन नलवडे, उपाध्यक्ष हिंदुराव शामराव जाधव, चेअरमन मारोतराव भाऊसाहेब निगडे, सेक्रेटरी श्री.आप्पासाहेब गणपतराव वणिरे, मा.भिक्षेप पाटील आदि महान हस्तियों ने मेरी आर्थिक परिस्थिति को देखकर अपनी ही संस्था के अंतर्गत चलनेवाले राजाराम छात्रवास में मुफ्त में भोजन की व्यवस्था की तथा इस लघु शोध-प्रबंध की छपाई के लिए आर्थिक मदद प्रदान की इसलिए मैं उनका आजन्म ऋणी रहूँगा। इसी संस्था के सचिव आप्पासाहेब गणपतराव वणिरे जी ने अपनी साईकिल देकर मेरी आने-जाने की दिक्कत को दूर कर दिया और इसके साथ ही अपने कार्य में व्यस्त होते हुए भी मेरे लिए चंदा दिया भी, इकट्ठा किया इसलिए मैं उनका आभारी हूँ। इसी संस्था के अंतर्गत आनेवाले महाराष्ट्र हायस्कूल के अध्यापक, न्यू कॉलेज के अध्यापक, राजाराम छात्रवास के प्रमुख वसंत बाबूराव पाटील जी के प्रति भी मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। इसके साथ ही श्री शाहू छत्रपति शिक्षण संस्था के सचिव मा.श्री.सुभाष श्रीपतराव बोंद्रे उर्फ दादा आपने मेरी आर्थिक स्थिति को जानकर मराठा बोर्डिंग में मुफ्त में निवास की व्यवस्था कर दी। इसलिए मैं उनका आभारी हूँ।

मेरे हितचिंतक श्री.दीपक गायकवाड उर्फ दादा, सौ.गीता गायकवाड, श्री.मधुकर येवले, डॉ.अनिल साळुंखे, श्री.प्रकाश चिकुर्डेकर, अशोक बाचुळकर, गिरीश काशीद , शाम रणदिवे, बाबू हेकडे,

बाळासाहेब गायकवाड, युवराज पोवार आदि का इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: इन सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बैरिस्टर बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय कोल्हापुर, राजाराम कॉलेज कोल्हापुर, शाहू ग्रंथालय छत्रपति शाहू शिक्षण संस्था, शहाजी कॉलेज कोल्हापुर और महावीर कॉलेज कोल्हापुर से हुई। अत: इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकण करनेवाले श्री.मिलिंद भोसले जी का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञात लोगों की शुभ कामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री.उत्तम ओंकार येवले)

कोल्हापुर
दिनांक : 19/11/98

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय - मोहन राकेश : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व **1 से 20**

1.1 मोहन राकेश : व्यक्ति परिचय

1.1.1 जन्म

1.1.2 माता

1.1.3 पिता

1.1.4 परिवार

1.1.5 पारिवारिक स्थिति

1.1.6 बचपन

1.1.7 शिक्षा- दीक्षा

1.1.8 नौकरी

1.1.9 वैवाहिक जीवन

1.1.10 मृत्यु

1.2 व्यक्तित्त्व की विशेषताएँ

1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्त्व

1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्त्व

1.2.2.1 बुद्धिमान मेधावी छात्र

1.2.2.2 प्रतिभा संपन्न

1.2.2.3 अच्छे मित्र

1.2.2.4 ईमानदार

1.2.2.5 स्पष्टवादी

1.2.2.6 राकेश के ठहाके

1.2.2.7 स्वाभिमानी

1.2.2.8 मानव सुलभ भावना से युक्त

पृष्ठ संख्या

1.3 मोहन राकेश का कृतित्त्व

1.3.1 कहानी साहित्य

1.3.2 उपन्यास साहित्य

1.3.3 नाटक

1.3.4 एकांकी

1.3.5 अनुवाद

1.3.6 काव्य कविताएँ

1.3.7 यात्रा वृत्तांत

1.3.8 संस्मरण

1.3.9 जीवनी

1.3.10 रेखाचित्र

1.3.11 डायरी

1.3.12 निबंध

1.3.13 लेख

1.3.14 बाल कहानीसंग्रह

1.3.15 संपादन कार्य

1.3.16 शोधकार्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - मोहन राकेश के नाटक : विषयगत विवेचन **21 से 48**

2.1.1 आषाढ का एक दिन

2.1.2 लहरों के राजहंस

2.1.3 आधे अधूरे

2.1.4 पैर तले की जमीन

निष्कर्ष

पृष्ठ संख्या

तृतीय अध्याय - प्रेम-संकल्पना : स्वरूप और सिद्धांत **49 से 69**

3.1.1 प्रेम शब्द की व्युत्पत्ति

3.1.2 प्रेम शब्द का व्युत्पुत्तिगत अर्थ

3.1.3 प्रेम शब्द का कोशगत अर्थ

3.1.4 प्रेम की परिभाषा

3.1.5 प्रेम का स्वरुपगत विवेचन

3.1.6 प्रेम का सैद्धांतिक विवेचन

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य नाटकों में चित्रित प्रेमभावना **70 से 98**

4.1.1 प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम

4.1.2 मानवीय प्रेम

4.1.3 विवाहपूर्व प्रेम

4.1.4 दांपत्य प्रेम

4.1.5 मित्र प्रेम

4.1.6 असफल प्रेम

4.1.7 नौकर-मालिक का प्रेम

4.1.8 माता-पिता का प्रेम

4.1.9 माँ-बेटी का प्रेम

4.1.10 राजा-प्रजा का प्रेम

4.1.11 ईश्वरीय प्रेम

4.1.12 विवाहेतर प्रेम

4.1.13 माँ-बेटे के बीच हीन रिश्ता

4.1.14 बाप-बेटे का प्रेम

4.1.15 मामा-भाँजे का प्रेम

4.1.16 बाप का बेटी से प्रेम

पृष्ठ संख्या

4.1.17 भाई-बहन का प्रेम

4.1.18 बाहर से सफल किंतु भीतर से असफल प्रेम

4.1.19 नौकरी पेशा महिला और उसके बॉस का प्रेम

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - विवेच्य नाटकों में प्रेम-समस्याएँ **99 से 123**

5.1.1 अर्थ की समस्या

5.1.2 तीसरे व्यक्ति का आगमन

5.1.3 समझौते की भावना का अभाव

5.1.4 स्वच्छंदता

5.1.5 अहं

5.1.6 विवाहेतर संबंध

5.1.7 व्यक्ति की दुर्दमनीय इच्छा

5.1.8 स्वभावगत भिन्नता

5.1.9 पौरुषत्व का अधिकार

5.1.10 संस्कारहीनता

5.1.11 असंतुष्टता

5.1.12 निठल्लापन

निष्कर्ष

उपसंहार - **124 से 130**

संदर्भग्रंथ सूची - **131 से 136**